IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

गीता भाव दर्पण

कवि-कुलदीप

गांव -गोमला, महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

शिक्षा -डीएड०, बीएड०, एम०ए (हिन्दी), पीएच०डी (अध्ययनरत)

एनजीओ - दहेज विरोधी मिशन, गोमला

प्रस्तावना :-

दो शब्द :-

श्रीमद् भागवद गीता केवल मात्र एक धर्मग्रंथ नहीं है बल्कि एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन है। गीता दर्शन एक ऐसा प्रष्कृत व कसौटी पर खरा उतरता हुआ जीवन दर्शन है जो भूत, वर्तमान और भविष्य में मानव जीवन के लिए प्रासांगिक है।

गीता भाव-दर्पण' के माध्यम से गीता के मूल व गूढ अर्थ को जनमानस तक पहुँचाने का कार्य करके कवि श्री कुलदीप सिंह तंवर गोमला जी ने बडा ही प्रशंसनीय कार्य किया है। मुक्त छंद की यह कविता आम भाष मे होने के कारण जनसामान्य तक गीता के संदेश को पहुँचाने में सफल रहेगी तथा मानव मात्र के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत व तनाव ग्रस्त एवम् पथ-विचलित मानवता के लिए पथ-प्रदर्शन का कार्य करेगी, ऐसा मेरा मानना है।

- अर्जुनविषाद योग :-

कुरुक्षेत्र के मैदान में, सैना खड़ी तैयार।

व्याकुल हर वीर था, करने को एक वार ।।

ग्यारह अक्षौहिणी सैना कौरव, सात अक्षौहिणी पांडव ।

मौत पैगाम दे रही, करने को तांडव ।।

समय चक्र रुक गया, दिशाऐं भयभीत थी।

जीवन फीका पड़ गया, मृत्यु जगजीत थी ।।

मैदान इतिहास लिखने को आतुर,

लाँघी सब सीमाएं थी।

साक्षी बनकर भूमि ने, दे दी स्पष्ट गवाही थी ।।

२थ लेकर अर्जुन का, माधव पहुँचे बीच मैदान ।

मुख मंडल पर शोभा थी, दिव्य करुणानिधान ।।

खडा किया था २थ अर्जुन का, दोनों सैनाओ बीच।

खड़े हुए थे वहाँ महारथी, डोर धनुष की खींच ।।

देख रहा था अर्जुन, सैना को बारम्बार ।

सोच रहा था मन में जैसे, ले दुनिया का अंबार ।।

दादा मेरे, चाचा मेरे, मेरे भाई मेरे नाती।

संबंध सारे जानकर, जाने सारे साथी ।।

गाडिव हाथ से उठा नही, क्षीण हो गई शक्ति थी।

हाथ काँपने लगे अर्जुन के, व्यर्थ हो गई भक्ति ।।

कैसे मारू स्वजनों को, प्रश्न था मन में।

शरीर निढाल-सा हो गया, जैसे प्राण नहीं तन में ।।

मार कर स्वजनों को, भला कैसे सुख पाऊँगा।

कुल घाती बनकर मैं, भला कैसे मुख दिखलाऊँगा ।।

इच्छा नहीं राजभोग की, ऐसा राज न मुझको चाहिए ।

द्वैष भावना उत्पन्न करे, ऐसा संसार न मुझको चाहिए ।।

देख रूप ये अर्जुन का, भाँप गऐ थे माधव ।

मोह माया के जाल मे, ये जान गऐ थे माधव ।।

समय आ गया था जीवन में, विराट रूप दिखाने का।

संसार के इस काल में, गीता ज्ञान बताने का ।।

-: सांख्या योग :-

कौन है स्वजन तेरे, कौन है बन्धु-बांधव ।

तेरे सामने जो खड़े, वो है सब दानव ।।

लक्ष्य को चूको मत, काम करो अपना ।

ध्यान करो तुम धरणी का, पाप हो गया कितना ।

पाप बढा है धरती पर, हे मानव तू ये जान ।

शस्त्र तुमने त्याग दिया, तो जीवन को धिक्कार ।।

धिक्कार हुआ जीवन तेरा, यह पाप जगत रह जायेगा।

गांडिव तुमने त्याग दिया तो, याद इतिहास रह जायेगा ।।

हुआ अपमान द्रोपदी का, याद करो उस मंजर को ।

दुश्मन ने पीठ पर मारा, याद करो उस खंजर को ।।

जो युद्ध से पीठ दिखाता है, यह क्षत्रिय का धर्म नही।

जो धर्म की रीत निभाता है, उसे मृत्यु का भी मर्म नही ।।

हे पार्थ अब सुनो ध्यान से, जीवन का इतिहास।

लाखो जन्म तुमने लिऐ, जैसे कोई वनवास ।।

लक्ष्य एक लेकर, हर मानव पैदा होता।

जीवन का जो मर्म जान ले, अपने मन को धोता ।।

तेरा मन व्याकुल कैसे, मन में उत्पन्न जो संशय।

निकाल फेंका जो लक्ष्य, धारण कर जगजीत ।।

बाधा आई जीवन में, मनवा डोले बीहड़ वन में।

घूमे क्षत्रिय जो रण में, वह जीवन लेता जीत ।।

कर्मयोग

जो बाधाओ से हारे है, वो इतिहास ने नकारें है।

सुकर्म मानव तो, संसार से न्यारें है ।।

लक्ष्य भूलने वाला मानव, रहता सदा निराश ।

जीवन में उठ जाता है, उस पर से विश्वास ।।

जीना-मरना एक चक्र, संसार का है नियम ।

जिसे तुम मृत्यु समझो, वास्तव में वहीं जीवन ।

योनि एक छोडकर, द्वितीय योनि पाता जीव ।

मेल कर्मों का जानिए, गुण ईश्वर के गाता जीव ।।

कर्म किए बिना ही, जो इच्छा करता फल की।

कुआँ खोदे बगैर, मनशा करता जल की ।।

व्यर्थ है जीवन उसका, धरती पर है भार।

जीवन में उस मानव का, नही होता उद्धार ।।

सोच विचार छोडो दुख का, सुख का न कभी ध्यान धरो।

विजय-पराजय भूल सभी तुम, बाण का सन्धान करो ।।

नहीं लगेगा पाप तुम्हें, व्यर्थ सोच को त्यागो ।

निष्काम भाव को छोड सखा तुम, बाण विजय का दागो।।

तुम आत्मा मैं परम आत्मा, दिव्य है यह ज्ञान।

जीवन का एक लक्ष्य दिया, हर मानव को जान ।।

लक्ष्य पूर्ण होता जिस दिन, छोडे जो संसार ।

जीवन एक छुटता लेकिन, दूजा हो तैयार ।।

धर्म लोप होता धरती पर, जीवन में अंधकार ।

लेता जन्म तभी मैं, करने को सत्कार ॥

जीवन में आनंद भर देता, देता नया संगीत ।

जोशीला वीर जैसे, जग आया हो जीत ।।

जो कर्मयोगी होता है, वह मन का होता मीत।

लक्ष्य को धारण करके, बुद्धि लेता जीत ।।

बुद्धि लेता जीत, जो कर्म करने का आदी ।

माने विश्व जहान, हो मानवतावादी ।।

कर्म ही महान है, यह ज्ञान है संसार का।

बिन कर्म के तो बेकार है, स्मरण भी भगवान का ।।

यह क्षत्रिय का धर्म है, युद्ध करे सम्मान में।

विजयश्री लेकर आए, या जीए ना संसार में ।॥

विश्वरूपदर्शन योग

बुद्धि ज्ञान क्षमा सत्य, दम्भ शम दुख जन्म-मरण।

भय अहिंसा समता सन्ताप, तम दान यश-अपयश ।।

ये सभी भाव है मेरे में, फिर भी रहता भाव रहित ।

मैं पाप का संहार करूँ, तीनों लोक सहित ।।

मैं आदित्यों में विष्णु, नक्षत्रों में चन्द्रमा।

मैं वेदो में सामवेद, देवो में इन्द्र हूँ।।

मैं इन्द्रियों में मन, मैं ख्दो में शिव।

मैं यक्षो में कुबेर, पहाड़ो में सुमेर हूँ ।।

मैं अष्ट वसुओं में अग्नि, सेनापतियों में स्कन्द ।

मैं पुरोहितो में बृहस्पति, जलाशयों मे महासागर हूँ।

मैं देवर्षियों में नारद, स्थावरो में हिमालय ।

मैं अक्षरों में ओकांरा, और वृक्षो में पीपल हूँ।

मैं नारायण हूँ, तुम नर हो।

मैं साधक हूँ, तुम साधन हो ।।

मैं जीवन हूँ, मैं मृत्यु हूँ।

मैं धर्म हूँ, मैं पुण्य हूँ।।

जीवन के तीन पड़ाव, सृजन पोषण और विनाश ।

सृजनता से जीवन उद्भव, हो पालन से विकास ।।

विकास से कर्मों का बंधन, जाने विश्व जहान ।

लीला पूर्ण विनाश हुआ, जीवन का सतनाम ।।

-: शुणत्रयविभाष योग :-

तीन गुण मानव में, गुण मात्रा भिन्न ॥

जैसा गुण व्यापक होता, वैसी बुछि लीन ।।

भोजन जैसा लेता मानव, वैसा होता मन ।

जैसा मन होता है, वैसा सोचे जन ।।

तमो गुण जिस मानव में, नीच करे वो काम ।।

मन में हरदम मैल रहे, जीवन में दुष्काम ।।

दूर रहे वो ईश्वर से, नहीं मानता पाप ।

उल्टे - सीधे काम करे, नही प्रभु का जाप ।।

क्रोध करे जो व्यक्ति, बुद्धि होती क्षीण।

बल खो देता शरीर का, विचार रहे भिन्न ।।

विनाश को निमंत्रण देता, बेचैन रहे मन में।

सम्मान खो देता वह अपना, मान रहे ना जन में ।।

सामान्य रहता वह मानव, जो रजोगुण प्रधान।

ना पाप करे ना पुण्य करे, यही उसका विधान ।।

जीवन के स्वार्थ कार्य में, रहता हरदम व्यस्त ।

जीवन उसका ढलता ऐसे, मानव रोग-ग्रस्त ।।

सतोगुण का मानव, रहता सत्यवादी ।

जीवन से कोई मोह नही, यह उसकी आजादी ।।

ध्यान में भगवान रहे, मन में रहे सत्कर्म ।

स्वार्थ जीवन में रहे नही, और मानव सेवा धर्म ।।

भोजन के तीन प्रकार, जाने बुद्धिमानी जन ।

भोजन खाए देख समय को, सात्विक आहारी मन ।।

सात्विक भोजन मानव का, राजसी मे सर्वाहार ।

भोजन जैसा मन होता, तामसी में मांसाहार ।।

भक्ति योग

मेरी शरण में आओ अर्जुन, क्षमा करूँगा पाप ।

डरो नहीं तुम निर्भय बनो, मन में करो जाप ।।

नेकी कर दरिया में डाले, वो नर होत महान ।

सभी मनोरथ पूर्ण हो, माने सकल जहान ।।

अज्ञान मोह ममता को, छण में नाश करो।

सत्य ज्ञान का मन में, तुम प्रकाश करो ।।

शरण मेरी जो आवे, मेरी मति ग्रहण करें।

पाप ताप मिट जावे, निर्भय भव सिंधु तरे ।।

मनन करे जो ईश्वर का, शुद्ध रहती आत्मा ।

रोग दोष मिट जाते हैं, माने जिसे महात्मा ।।

जीवन में सद्गुण आते, छूटे जोड़े पाप ।

ध्यानयोगी वह जानिए, मनन करे जो आप ।।

शास्त्र विधि को त्यागकर, ना कोई सुख पाता है।

न सिद्धि मिलती उसे, न मोक्ष गति लाता है ।।

जीवन भक्ति का नाता है, नाम ईश्वर के गाता है।

चौरासी लाख योनियो में, वह मानव जीवन पाता है ।।

भक्ति करना धरती से, जो जीवन पोषक सार ।

धारण करती जीवन को, सब जीवों का भार ।।

सब जीवों का भार, नहीं उपकार बताती ।

देती पेड़ लगाए, वह जीवन फल खाती ।।

ज्ञान - विज्ञान

जीवन का पालन होता, ममता है आधार।

जीव जीव को पालता, देता ईश्वर का आभार ॥

दुख-सुख का बंधन ऐसा, जैसे धूप और छांव ।

दुख में सुमिरन सब करें, दे हृदय में भाव ।।

सत्य का जो मार्ग बताएँ, भवसागर से करता पार।

जीवन में जो वक्ता बनकर, देता नेक विचार ।।

दीपक बनकर रोशन करता, दोषो को जो देता मार।

सम भगवान के जानिए, ले धरणी का भार ।।

तीन हठ है दुनिया में, राज बाल और नारी।

राज हठ में राजा डूबे, प्रजा लेकर सारी ।।

बाल हठ में बालक, होता है बलकारी।

नारी हठ में नारी का, पलड़ा होता भारी ॥ 11

हर मानव के पास में, महाशक्ति है तीन।

समय, शब्द और बुद्धि, यही ज्ञान की रीत ।।

समय देखकर जो चले, शब्दों को जो बोले तोल ।

बुद्धि से ध्यान लगाडे, वह मानव अनमोल ।।

तीन अवस्था जीवन की, बचपन जवानी और जरा।

बचपन में बालक के मन में, होता जोश भरा ।।

रोनक रहती चेहरे पर, सम्पूर्ण जवानी में।

सीधे-उल्टे काम करें, उम्र नादानी में ।।

देख जरा को जब घबराता, जीवन में सन्नाटा आता।

फिर माला लेकर तुलसी की, गीत ईश्वर के गाता ।।

जब शरीर का घट जाता नूर, जीवन के सब सपने चूर।

सांसो की जब डोरी टूटे, मोह-माया से होता दूर ।।

शरीर जन्मते मरते, आत्मा अविनाशी।

शरीर को दुख व्यापे, आत्म सुखराशि ।।

मन को देश में करके, इच्छा त्याग करो ।

निष्काम जग में रहकर, हरि से अनुराग करो ।।

पाँच तत्व से बना शरीर, वायु अग्नि और आकाश ।

जल भूमि का समावेश रहे, हो आत्मा निवास ।।

मन चंचल रहता सदा, मानव का व्यवहार ।

जैसे पानी का झील में, बहना हो स्वभाव ।।

जीवन एक संगीत है, साँसो की है बीन।

मृत्यु का सम्बन्ध ऐसे, चकोर चाँद में लीन ।।

जीवन को छोटा समझे, करे नेक जो काम ।

सदाचार जीवन में ढाले, मन पर दे लगाम ।।

सुख-दुख में सम रहे, राग-द्वेष से दूर ।

मन को वश में रखे, भक्ति हो भरपूर ।।

धीर पुरूष वह जानिए, होता शोक रहित ।

मन सन्तोषी रहता जिसका, जीवन ज्ञान सहित ।।

छः विकास जीवन के, उत्पत्ति को प्रथम मान।

अस्तित्व है द्वितीय, वृद्धि तृतीय जान ।।

विपरिणात्स होता चतुर्थ, पंचम है अपक्षय ।

विनाश होता है अंतिम, जिसका होता भय ।।

ज्ञान योगी होता वह, जो लेता रहता ज्ञान।

सर्वप्रथम भगवान का, जाने विधि-विधान ।।

ज्ञान के सहारे, रोशन करता जीवन को।

ज्ञान बाँटता वो फिरे, देख फल उद्दीपन को ।।

मन में स्मरण किया सुख का, तो सुख मिलता भरपूर ।

दुख में जीए जो नर, तो सुख रहता दूर ।।

जैसा सोचो वैसा मिलता, मन मंदिर होता है।

मन में सोचो सो अच्छा, तो जीवन अच्छा होता है ।।

दुखी मन मानव का, रोग का इंतजार करे।

दुख में भँवरा गुन-गुन छोडे, फूलो से द्वेष राग करे ।।

रूठा मन माला छोडे, हो पल में वैरागी।

मृत्यु आए माया छोड़े, जाता बन सन्यासी ॥

दान उचित जो करते हो, वह फलदायी होता है।

मुर्ख को जो दान किया, वह दुखदायी होता है ।।

नेक कार्य नेक समय, वह जीवन का वरदान ।

दान पाप का नाश करे, उचित मानव महादान ।।

सुन्दर मन सुन्दर आत्मा, तो सुन्दर हो संसार ।

सुन्दरता मन में होती, तो सुन्दर है भगवान ।।

जीवन सुन्दर होता वह, जो हर जीव को मिलता है।

नियम के अनुसार ही, जीवन चक्र चलता है ।।

मानव संगति जो करे, वैसा बन जाता है।

गिरगिड देखे जो रंग, वैसा रंग जाता है ।।

विचार जो मानद के, वो संगत का परिणाम ।

सुसंगत रंगत मानव की, देवत भी प्रणाम ।।

हर योनि के जीव में, होता गुण विशेष ।

गुण पहचाने जो जीव, देता जो संदेश ।।

जीवन पाया धरती पर, वो जीने का अधिकारी।

छिने जीवन स्वार्थवश, वो घृणा अत्याचारी ।।

समय होत बलवान, समय की चाल निराली।

समय बना दे राजा, समय रंक - मवाली ॥

विपरित समय बुद्धि हरता, मानव का महाकाल ।

समय साथ मन सोचे जो, साथ रामय चिरकाल ।।

ज्ञानेन्द्रियाँ पंच होती, भिन्न-भिन्न इनके काम।

स्वाद बताए रसना, सुगंध लिए घाण ॥

जग सारा देखे चक्षु, ध्वनि सुने श्रोच ।

महसूस होता त्वक से, नियम माने मन की सोच ।।

ऋषि मुनियो की भूमि पर, ज्ञान का उद्भव हुआ ।

मानवता को सिंचित करके, सृष्टि का विस्तार हुआ ।।

सुंदरता के रंग बिखरै, जो ऋषियों ने ठानी थी।

सम्पूर्ण धरा पावन मन, आशीर्वाद की वाणी थी ।।

मोक्षसंन्यास योग

सत्कर्म करता जो मानव, वह मोक्ष पा जाता है।

जीवन - मृत्यु बंधन से, वह ऊपर उठ जाता है ।।

दिव्य ज्ञान वह पा जाता है, ले विद्या सम्पूर्ण ।

नाशवान जीवन को छोडे, लक्ष्य होता पूर्ण ।।

माया से मन मोहित होता, माया स्वार्थ साथ रहे।

माया से मिलने हेतु, मानव नित काम करे ।।॥

जग मे चंचल माया होती, माया से दुख मिलता है।

सन्तोष मिटे मन व्याकुल हो, सुख नारायण से मिलता है ।।

शस्त्र काट नहीं सकता, अग्नि जला नही सकती।

जल डूब नहीं सकता, वायु सुखा नहीं सकती ।।

न मरती न जन्म लेती, वह अविनाशी होती है।

वह सत्य है आत्मर, शक्तिशाली होती है ।।

ज्ञान का अमृत पी लो, ध्यान का रसपान करो।

मानव हो तुम मनन करो, विद्या का तुम मान करो ।।

दीप जलाओ ज्ञान का, तुम अंधकार को दूर करो।

ज्ञान विद्या सत्कर्म से, भव सागर से पार तरो ॥

शुद्ध वचन शुद्ध कर्म, शुद्ध संगत से मेल ।

शुद्ध होते दुख भोगे, जो पूर्ण जन्म का खेल ।।

शुद्ध मन रखना मानव, धुल जायेंगें पाप ।

नेक नीति धैर्यशीलता, जो ईश्वर का जाप ।।

नैतिक का नियम माने, मानवता का ध्यान करें।

सदाचार जीवन में ढाले, बड़ो का सम्मान करें ॥

ईर्ष्या - द्वेष का नाश करें, मन को शांत करें।

ईश्वर का ध्यान करें, सभी कार्य नेक करें।

ज्ञानी से मेल करें, जीवन में प्रकाश करें।

अज्ञान का नाश करें, उचित जगह निवास करें ।।

जीवों पर रहम करें, सत्य का मान करें।

जीवन में न्याय करें, दोषों का त्याग करें

आत्मा को शुद्ध करें, समय को मजबूत करें।

कोयल जैसी वाणी रखो, बगुले जैसा ध्यान करो ॥

कौवे जैसी करो चेष्ठा, बंदरी जैशी ममता ।

मछली जैसा प्रेम करो, कुत्ते जैसी कर्मनिष्ठा ।।

हंस जैसा चयन करो, चातक जैसी आतुरता।

वृक्ष जैसा बनो दातार, चींटी जैसा श्रमवान ।।

चाँदनी - सी शीतलता, सूर्य - सा प्रकाश ।

फूलों - सी सुगंध, गान जैसा आनंद बनो ॥

विष्णु जैसा सुंदर, शिव जैसा रोद्र ।

बह्मा जैसा ज्ञानी, और नारद जैसा ध्यानी बनो ।।

श्रवण जैसा पुत्र, राम जैसा आदर्श ।

गंगा जैसा पानी, ओउम् जैसा नाम बनो ।।

भीष्म जैसा संकल्प, महाराणा जैसा स्वाभिमान ।

स्वर्ण जैसी आभा, पाषाण जैसा कठोर बनो ।

दधिची जैसा त्यागी, गोरख-सा वैरागी।

विदुर जैसा विचारक, अमृत जैसा पान बनो ।।

हरिशचन्द्र - सा सत्यवादी, भरत जैसा भाई।

ऋग्वेद जैसा वेद, ज्योतिष जैसी विद्या ।।

धरती जैसा पालक, और चाणक्य - सा सुचालक ।

सेवा जैसा धर्म, जल जैसे निर्मल बनो ।।

एक राम घट - घट में ट में बोले ।

दूजा राम दशरथ घर डोले ।।

तीजे राम का सकल पसारा।

चौथा राम है वो, जो है दुनिया से न्यारा ।।।